ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-7* October-2020
Anthology : The Research

संगीत के क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण

Women Empowerment in the field of Music

Paper Submission: 10/10/2020, Date of Acceptance: 20/10/2020, Date of Publication: 21/10/2020

ऋचा उपाध्याय
प्रवक्ता,
संगीत विभाग,
सोना देवी सेठिया गर्ल्स पी. जी कॉलेज, सुजांनगढ़, भारत

सारांश

नारी स्वयं एक शक्ति स्वरूपा हैं। शक्ति स्वरूपा होते हुए भी इसकी सौम्यता का उदाहरणं है कि विभिन्न कालो में इसकी स्थिति परिस्थिति परिवर्तित होती रही है । जहां वैदिक काल में इसे सभी अधिकार और सम्मान प्राप्त थे। वही मध्यकाल में इसने पर्दे में रहना स्वीकार किया किंतु कुछ स्त्रियों ने इस काल में भी संगीत की साधना की। उसके बाद के कालों में इसकी स्थिति अत्यंत दयनीय होती गई। इनका संगीत के क्षेत्र में कहीं वर्णन प्राप्त नहीं होता है किंतु आधुनिक काल में नारी में एक नई चेतना नई ऊर्जा का संचार हुआ है। संगीत साध्वी को संगीतज्ञा का स्थान प्राप्त हुआ जिसका साक्षात् उदाहरण है – परवीन सुलताना जी, प्रभा अत्रे जी, किशोरी अमोनकर जी, गंगूबाई हंगल जी इत्यादि जिन्होंने आज देश ही नहीं वरन विदेशों में भी अपने गायन से हमारे देश का परचम लहराया है।

Woman is the ShaktiSwarup, in spite of being Shakti Swarup, the example of her softness is that her situation has been changing in the different period.Where in the Vedic period she had all the rights and honours, while in the medieval period she accepted to remain in the veil. But still some women did music sadhana also in this period. In the later years her position became extremely pathetic, but there is no such description about it in the field of music. But in the modern period, new consciousness and energy have been introduced in the woman. The sangeetsadhavis got the position of Musicians and the illustrative examples of this are - Parveen Sultana ji, PrabhaAtreji ,KishoriAmonkkarji, GangubaiHangalji, etc. who have made our country proud in the whole world with their singing.

मुख्य शब्द : सशक्तिकरण, पराधीनता, व्यभिचारी, उत्तरार्ध, सहभागिता, स्वच्छंद, आवागमन, आमोद प्रमोद।
Empowerment, Precariousness, Dependency, Satyr, Laterhalf, Patnership, Wayward, Marching, Recreation.

प्रस्तावना

स्त्री की आर्थिक निर्भरता की आवश्यकता पर जोर देते हुए 1936 में स्त्रियों को सम्बोधित करते हुए नेहरू ने कहा ''स्वतंत्रता राजनीतिक से ज्यादा आर्थिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है तथा यदि एक स्त्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं है तथा स्वयं नहीं कमाती है तो उसे अपने पति या अन्य किसी पर निर्भर होना पड़ेगा। आश्रित होना पड़ेगा तथा आश्रित स्वतंत्र नहीं होते।'' प्रतिभा जैन का मत है कि नेहरू की स्त्री की आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने के प्रयत्न मात्र सामाजिक, विचार नहीं है बल्कि उन्होंने आर्थिक मुक्ति को स्त्री की समस्याओं को सुलझाने की सर्वरोगनाशक औषधि अथवा रामबाण तरीका माना[2]। इसी प्रकार का कुछ मत हमें जयशंकर प्रसांद की कविताओं में देखने को मिलता है । उन्होंने अपने गद्य पद्य दोनों में ही स्त्री को महिमामंडित किया है। 'कामायनी महाकाव्य' में श्रद्धा कहकर स्त्री के अत्यंत उज्जवल चरित्र को रेखांकित किया है

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो , विश्वास रजत नग – पग तल में ,
पीयूष स्रोत – सी बहा करो , जीवन के सुंदर समतल में ''[3]।

समाज में पुरूष हो या स्त्री दोनों के अधिकारों में अंतर रहा है। मानव जन्म से पूर्व प्राकृतिक नियमों में बंधा होता है व जन्म के पश्चात् सामाजिक नियमों में। ये सामाजिक नियम मानव के साथ प्रत्येक काल में रहे हैं, क्योंकि मानव ने जबसे सामाजिक होना सीखा तभी से वह अपने में से श्रेष्ठ व्यक्ति को सरदार, राजा आदि पद प्रदान करता गया। उस चुने हुए बुद्धिजीवी व्यक्ति द्वारा

बनाये नियम ही मानता रहा है। फर्क बस इतना था कि यह नियम स्त्री व पुरूष के लिए समान न थे। यही मानवीय अधिकार मानवाधिकार के रूप में विकसित हुए। जिनमें संभवतः संतुलन न था। फलतः समय के साथ इनमें आंदोलनकारी परिर्वतन आते गए। इस विषय पर प्रसिद्ध राजनीति एवं विधि वैज्ञानिक 'लास्की' ने कहा है ''एक राज्य का मूल्यांकन उन अधिकारों से होता है। जो उसे द्वारा अपने नागरिकों को प्रदान किए जाते हैं।[4]'' दूसरे शब्दों में प्रत्येक राज्य के द्वारा अपने नागरिकों को संविधान के माध्यम से व समय–समय पर कानून बनाकर कुछ न कुछ अधिकार प्रदान किए जाते हैं, जिनका एक निश्चित सीमाओं के अंतर्गत उपभोग करते हुए वे अपना विकास करते हैं।

महिलाओं के संदर्भ में प्रत्येक काल में स्थितियाँ भिन्न–भिन्न प्राप्त होती है। वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था को इतिहासकारों ने आदर्श व्यवस्था स्वीकार किया है। इस काल में नारी को सम्मान प्राप्त था। शिक्षा के द्वार स्त्री व पुरूष सबसे लिए समान रूप से खुले हुए थे। वैदिक काल में स्त्रियाँ वेदों का अध्ययन करती थी। वैदिक साहित्य के अध्ययन के अतिरिक्त गणित, आयुर्वेद संबंधित, नृत्य तथा विभिन्न शिल्प कलाओं की शिक्षा दी जाती थी।

संगीत शिक्षा पर विशेष बल देने के कारण वेदों की ऋचाओं का सस्वर पाठन करना होता था। विशेषतः सामवेद की ऋचाओं का गायन स्त्रियों द्वारा ही होता था।

तैत्तिरीय उपनिषद् में शिक्षा समाप्ति के पश्चात् गुरू, शिष्य को दिये जाने वाले उपदेश में 'मातृदेवो भवः पितृ देवो भवः' कहा गया है।[5] माता को संतान की प्रथम गुरू माना गया है।

वैदिक स्त्रियों की उच्च सामाजिक स्थिति का मूल्यांकन करने, सार्वजनिक क्षेत्र में उनकी सहभागिता, पुरूषों के साथ बातचीत करने की स्वतंत्रता, स्वंछद आवागमन की सुविधा, अमोद–प्रमोद एवं उत्सवों में भाग लेने की स्वतंत्रा से किया जा सकता है।

मध्यकाल तक स्त्रियों की स्थिति में अपार परिवर्तन हुए। इस युग में स्त्रियों की स्थिति उत्तरोत्तर गिरने लगी। मध्य काल की स्त्रियों में स्वतंत्रता का भाव नहीं था। मध्यकाल में ही बाहरी आक्रमणों के आतंक के कारण ही पर्दा प्रथा आरंभ हो गई थी, परन्तु पर्दे में भी स्त्रियाँ गायन करती थी। तब स्थिति यह भी आई की मुगलों के संगीत से अतिशय प्रेम को देख कर औरंगज़ेब ने शंहशाहों के पतन का कारण संगीत को ही माना और भारत से संगीत का नामोनिशान तक मिटाने को अग्रसर हो उठा। मध्यकाल में अच्छे घरों की स्त्रियों के लिए संगीत उपयुक्त नहीं समझा जाता था। महिलाएँ घर के शादी ब्याह में पुरूष की अनुपस्थिति में ही कुछ गा बजा कर मन की कुण्ठाओं को दूर कर लेती थी।

मध्यकाल में नारियों की दो ही गतियाँ थीं घर में बंद रहकर चूल्हें चौकी में हाड़ खपाना और खानदान की वृद्धि करना या लोक लाज छोड़ कर कोठों पर नाचना और व्यभिचारियों का कामोन्नमाद शांत करने के लिए शरीर बेचना।

18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत पर अंग्रेजों का अधिकार हो चुका था। अंग्रेजी सभ्यता के परिणाम स्वरूप संगीत का विकसित रूप कुंठित होता चला गया। इस काल के प्रारंभ में संगीत का प्रचार देशी रियासतों तक ही रहा। अंग्रेजों ने भारतीय संगीत को केवल कोलाहल व शोरशराबा ही समझा। परिणाम स्वरूप इस काल में संगीत का और भी पतन होता चला गया। इस काल में जो कुछ गिने चुने महान् संगीतकार बचे हुए थे, उन्होंने भी छोटे छोटे राज्यों के दरबारों में आश्रय लिया और संगीत की रक्षा की, संगीत की स्थिति इतनी खराब हो गई की वैदिक काल की उत्कृष्ट संगीत कला समाज के निम्न वर्ग में पहुँच गई जहाँ उसका लक्ष्य क्षणिक इन्द्रिय सुख मात्र ही रह गया।

सर विलियम्स जोन्स, कैप्टन डे, कैप्टन विलर्ड आदि कुछ ऐसे विद्वान हुए जिन्होंने भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर इसे उभारने के फलस्वरूप महत्वपूर्ण सांगीतिक ग्रंथों की रचना की जिसका प्रभाव भारत के शिक्षित वर्ग पर पड़ा और संगीत के प्रति अनादर का भाव कम होने लगा। अतः इस युग में स्त्रियाँ कला के सम्मानजनक क्षेत्र में कोई विशेष योगदान नहीं दे पाईं थीं।

आधुनिक युग में पण्डित वि.ना.मा. एवं पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर तथा रवीन्द्रनाथ के नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन्होंने अपने समय की प्रायः सभी सांगीतिक गतिविधियों को संग्रहित करके अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। इस समय में रविन्द्र नाथ टैगोर, श्री के.डी. बनर्जी, स्वामी प्रज्ञानन्द जैसे महान विद्वान भी हुए।

आधुनिक काल में ब्रिटिश शासन काल में छोटी–छोटी रियासतों में बंटा हुआ देश एक राष्ट्र के रूप में उभर कर नक्शे पर आ गया। अंग्रेजों की पूंजी प्रसार नीति के कारण विश्व के विकसित ज्ञान विज्ञान और दर्शन का झोका आया जिसने आम जनता में नई चेतना और आत्म सम्मान का भाव जगाया। गुलामी की जंजीरों में जकड़ी नारी अपने शोषण के खिलाफ खड़ी हो उठी। लक्ष्मी बाई से लेकर सरोजनी नायडू, बेगम रसूल, अमृत कौर, हाजरा बैगम, विजय, लक्ष्मी, पण्डित और इन्दिरा गांधी तक औरतों ने सामाजिक, राजनैतिक क्रिया–कलापों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।

संगीत के क्षेत्र में कोठे की परम्परा वाली अनेक नारियाँ अपनी कला निपुणता के कारण फिर से समाज में सम्मान पाने लगी। अनेक स्त्रियों में कोठे त्याग दिए और कला की साधना शुरू कर दी। नारी जगत में यह बदलाव केवल उस वर्ग में दिखाई दिया जो अंग्रेजों के आने के बाद प्रभाव में आया और स्वतंत्रता के बाद मध्य वर्ग के रूप में तेजी से उभरा।

नारी ने भी इस नए माहौल का भरपूर फायदा उठाया और अपने शोषण के खिलाफ आवाज उठाई।

आम जनता की विचारधारा बदलने से संगीत के प्रति भी दृष्टिकोण बदल गया। महिलाओं की संगीत शिक्षा फिर से आरंभ हो गई। इसका अर्थ यह नहीं की महिलाएँ अपनी पराधीनता से मुक्त हो गई। पर्दा एवं अन्य शोषण अभी भी स्त्री के जीवन से उसकी श्वास की जुडे हैं। किन्तु उदाहरण देखें तो पता चलता है कि अलाउद्दीन

खाँ साहब ने अपनी सुयोग्य पुत्री को संगीत कला के व्यवसायिक प्रदर्शन से स्वयं वंचित किया है। इसमें यह स्पष्ट होता है कि एक कलाकार की बेटी होने के बाद भी इन्हें गायन का अधिकार प्राप्त नहीं था। इतना सब होने के पश्चात् भी आज की नारी संगीत साधना करने और उसे प्रदर्शित करने में संलग्न है। जहाँ माणिक वर्मा, हीराबाई बडौदकर, सिद्धेश्वरी देवी आदि ने स्वतंत्र रूप से अपना प्रदर्शन कर गायन को नवीन उचाईयाँ दी। वहीं वर्तमान समय में परवीन सुल्ताना, लक्ष्मी शंकर जी किशोरी अमोणकरजी डॉ. प्रभा अत्रे जी निर्मला देवी जी, सविता देवी जी आदि। शास्त्रीय संगीत में अपने मधुर कण्ठ व विशिष्ट संगीत ज्ञान द्वारा स्वतंत्र व श्रेष्ठ प्रस्तुति कर रही है। नृत्य और वादन में भी सितारा देवीजी, वैजयंती माला जी, शरण रानी जी, जरीन दारूवाला आदि के नाम उल्लेखनीय है।

इस प्रकार वैदिक काल से अब तक संगीत कला में नारियाँ किसी न किसी रूप में स्वतंत्र रूप से उल्लेखनीय कार्य कर रहीं है। यह नारियाँ धन्य है जिन्होंने समस्त कार्यों और अपनी कला में संतुलन बनाते हुए विपरीत परिस्थितियों में भी संगीत कला के क्षेत्र में अतुलनीय कार्य किए हैं। संभवतः इसीलिए कहा गया है। ''यत्र नारयस्तु पुज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।''(मनु स्मृति)[6]

अध्ययन के उद्देश्य

1. इस विषय का चयन करने के पीछे मेरा उद्देश्य यह बताना है की विभिन्न कालों में संगीत के क्षेत्र में नारी की क्या भूमिका रही है।
2. किस प्रकार परिवर्तित परिस्थितियों से जूझकर नारी ने अपना एक अलग स्थान बनाया।
3. इस शाश्वत सत्य को लेख के माध्यम से सबके समक्ष लाना की नारी शक्ति स्वरूपा थी है और सदैव रहेगी।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि विभिन्न विभिन्न कालों में महिलाओं की स्थिति परिस्थिति अवश्य बदलती रही है किंतु वर्तमान में नारी पूर्ण रूप से सशक्त और शक्ति के रूप में स्थापित हो गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *परांजपे, डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ.सं.–16*
2. *शर्मा, भगवतशरण, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ.सं. –16*
3. *संदेश' डॉ, विजय कुमार, दलित चेतना और स्त्री विमर्श पृ, 402*
4 *गर्ग, लक्ष्मीनारायण, महिला संगीत, अंक, जनवरी–फरवरी, 1986, पृ.सं.–1*
5. *जैन, डॉ. पुखराज एवं मोहनोत, भारत की सांस्कृतिक विरासत, पृ.सं.–94*
6. *जोशी, उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ.सं.–64*